अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व विज्ञ (वर्ष : 2022) दिनांक : 17.08.2022

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (खण्ड-1)–70

प्र. 1 कोई छः पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव–इस ज्ञान चतुष्टयी के द्वारा जो जानता है।

(ख) सिंहनिष्क्रीडित आदि महान उपवास का अनुष्ठान करने वाला।

(ग) आध्यात्मिक श्वास, निःश्वास को क्या कहते हैं?

(घ) जो संयति प्रमाद आश्रव की विद्यमानता में साधना करता है।

(ङ) जिसमें देव होने की योग्यता प्राप्त हो जाती है।

(च) जो ज्ञान की परम कोटि तक पहुंच चुका है, जिसके लिए कोई ज्ञान पाना शेष न हो।

(छ) जो महान ईश्वर या स्वामी के रूप में जाना जाता है।

(ज) नाना प्रकार के रूपनिर्माण के लिए होने वाला आत्म प्रदेशों का प्रक्षेपण।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 6

(क) गर्भगत जीव किस आसन मुद्रा में रहता है?

(ख) सिद्धों को अवीर्य क्यों कहा गया है?

(ग) काय-परीत, काय परीत के रूप में कितने काल तक रहता है?

(घ) आधाकर्म आहार किसे कहते हैं?

(ङ) ऐर्यापथिकी क्रिया किसे कहते हैं?

(च) आयुष्य के कितने व कौन से प्रकार है?

(छ) भव-प्रपंच-निरोध से क्या तात्पर्य है?

(ज) कौन से जीवों का तद्भवमरण होता है?

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए– 30

(क) नैरयिक-जीवों और भवनपति-देवों में संहनन, संस्थान और लेश्या को नानात्व यंत्र द्वारा स्पष्ट करें।

(ख) चौबीस दण्डकों में क्रिया की प्राप्ति का क्रम लिखें।

(ग) अभयदेवसूरि द्वारा व्याख्यायित अस्तित्व और नास्तित्व के विकल्पों को बतायें।

(घ) विग्रह गति का अर्थ बताते हुए विग्रह गति के प्रकार बतायें।

(ङ) गर्भ में प्रवेश करते हुए जीव अशरीर-सशरीर किस प्रकार होता है?

(च) मुनष्य सवीर्य-अवीर्य किस प्रकार है?

(छ) भार का सम्बन्ध किससे है तथा दोनों नय के अनुसार इसके विकल्प बतायें।

(ज) ठाणं सूत्र के अनुसार स्थविर के प्रकारों के नाम लिखें।

(झ) वस्तुबोध की अपेक्षा चतुष्टयी को स्पष्ट करें।

(ञ) भगवान महावीर के शरीर के नौ विशेषणों के नाम लिखें।

(ट) आयुबन्ध के प्रकारों के नाम लिखें तथा आयुक्षय किसे कहते हैं?

(ठ) श्रावक अपने किवाड़ सदा खुला क्यों रखते हैं।

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप (5 से 7 पंक्तियों) में लिखें– 15

(क) आहार-पुद्गल वर्गणा को व्याख्यायित करें।

(ख) जगत की संरचना के घटक तत्त्वों को व्याख्यायित करें।

(ग) बालमरण के कितने प्रकार हैं? नाम लिखें।

(घ) भाव और गुण का विश्लेषण करें।

प्र. 5 कांक्षामोहनीय कर्म का वर्णन करें। 13

अथवा

समुद्घात का विवेचन करें।

झीणी चरचा–30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) पारिणामिक भाव कितने प्रकार का होता है? नामोल्लेख करें।

(ख) द्रव्य-पुण्य किस अपेक्षा से पुण्य माना जाता है?

(ग) मोक्ष को तीनों कालों में अशाश्वत क्यों कहा गया है?

(घ) किस पाप-स्थान की स्वतंत्र रूप में पृच्छा की जाए तो छह व नव में अन्तर आ जाता है?

(ङ) सिद्धों में कितनी व कौन सी आत्माएं उपलब्ध होती है?

(च) साम्परायिकी क्रिया को पुण्य किस सूत्र में बताया गया है?

(छ) चौदहवें गुणस्थान को अबन्ध क्यों कहा गया है?

(ज) उपशम व क्षपक श्रेणी का आरोहण किस गुणस्थान से प्रारम्भ होता है?

(झ) अनुयोग द्वार सूत्र में औपशमिक भाव के कितने और कौन से बोल बताए गए हैं?

(ञ) शुभ भाव लेश्याओं को धर्मलेश्या तथा कर्मलेश्या क्यों कहा गया है?

(ट) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम-निष्पन्न भाव से क्या-क्या उपलब्ध होता है?

प्र. 7 कोई तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) 'उदै-निपन छ-द्रव्य में जीव कहीजै, नव-तत्त्व मांहि कहीजै दोय।
जीव अनै आसव मिथ्यातादिक ए, उदय थी निपना उदय निपन जोय।।'

(ख) 'उदै-निपन मोहमर्क नो, पहिला सूं दशमां तांई जाण।
वेदनी आउ नाम गोत नो, उदै-निपन सर्व गुणठाण।।'

(ग) 'कोई कहै खायक-सम्यक्त वालो, सर्व चारित्र-मोह न उपशमायो रे।
त्यां लग उपशम-भाव न कहियै, ज्ञानी जाणै दोयां रो न्यायो रे।।'

(घ) 'गुणग्राम किती आत्मा नां करणां? षट् आत्मा नां करणां जी।
द्रव्य कषाय नां गुण नहिं करणां, निपुण विचारै निरणां जी।।'

प्र. 8 मुनि दस प्रत्याख्यान की आराधना करता है। इन दस प्रत्याख्यान का विवेचन करें। 8

अथवा

क्षय का द्रव्यों और तत्त्वों में समावेश का वर्णन करें।